धैर्य से कहो हम क्षुद्र हैं

हम भौतिक सुख के लोभी हैं। हमें सड़क, बिजली, पानी और स्कुलों का लालच है, अध्यात्म या भक्ती योग का नहीं। हम सात्विक आहार और ऊँचे विचार नहीं कर पाते हैं। इसी जन्म में न्याय और मेहनत के फल की अपेक्षा रखते हैं। जो काम मिले वही अच्छा, यह मानते हैं।

इसलिए हम क्षुद्र हैं।

आज के शोर और धुएँ में भी हमें कल की समस्याएँ दिखाई दे रही हैं। हमारे लिए शास्त्र वही जो इनसे लड़े और आज का जीना सुलभ करे। हमारे भौतिक सुख बढ़ाए और हमारा भविष्य सुरक्षित करे। हमें वेद नहीं पढ़ने हैं। ना ही हमें आज का IAS अफसर या IIT का इंजिनियर बनना हैं। यह २% की लॉटरी हमें नहीं खेलनी हैं। हमारे युवा पीढ़ी की सर्जनशीलता को नष्ट नहीं होने देना हैं। हमें इसी व्यवस्था में परिवर्तन लाना हैं।

हम ना किसी राजा की प्रजा हैं, ना किसी दरबार में याचक। हम लोग हैं और लोकहित पहचानते हैं। हम भिक्षा, दानधर्म और DBT की मर्यादा जानते हैं। हम हमारी मेहनत और बुद्धि से, इज्जत के दो पैसे कमाना चाहते हैं। हम हमारा सामुदायिक भविष्य खुद बनाना चाहते हैं।

हमें स्वतंत्रता, नागरिकता, समानता और वास्तववाद जैसी अवैदिक आधुनिकताओं पर विश्वास हैं। हम परंपरा ग्रस्त नही, इतिहास के बंदी नहीं। हम तो नई संस्कृति और नई परंपरा का उगम स्थल हैं।

हममे धैर्य हैं और आशा भी।
हम आजके क्षुद्र हैं।

- मिलिंद सोहोनी २० नवम्बर २०२१
(ध्यान रहें, क्षुद्र और शूद्र में अंतर हैं ।)